सफलता की कहानी

झारखण्ड के पूर्वी सिंहभूम में पटमदा ब्लॉक के एक छोटा सा गाँव है डांगा। अधिकांश ग्रामीण खेती पर निर्भर है। उनमें से किरीटी महतो एक युवा किसान है, जो हर साल फसलों का उत्पादन करने की पूरी कोशिश करते है। खरीफ के मौसम के दौरान किरीटी धान एवं मौसमी सब्जियाँ, तेल, बीज और दलहनी फसल उपजातें है। उसके पास लगभग पाँच एकड़ खेत है।
उन्होंने उच्च शिक्षा हासिल नहीं की है लेकिन उन्होंने कृषि कार्य में गहरी अभिरूचि है।

शुरूआती चरण में पैसे की कमी और खेती के अपर्याप्त ज्ञान के कारण उन्होंने थोड़ी फसल उगाई। वर्ष 2009 में वह आत्मा में एक किसान मित्र के रूप में चयनित हुए और कृषि कार्य में सघनता से लग गये। वह खेती की नई तकनीक सीखने के लिए महाराष्ट्र, कानपुर, राँची आदि जगहों में परिभ्रमण कार्यक्रम में गए। आत्मा में शामिल होने और विभिन्न राज्यों में भ्रमण के उपरांत और वैज्ञानिक से प्रशिक्षण लेने के बाद उन्होंने पूरी दिलचस्पी के साथ नए तरीके से खेती करना शुरू किया। आत्मा के तहत राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजना अन्तर्गत मूँग एवं हरित क्रांति योजना अन्तर्गत हाईब्रीड धान की खेती इन्होने किया है।

किरीटी ने अपने गाँव में ही माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की है। उनका एक बड़ा भाई है जो मानसिक रूप से अक्षम है। एक छोटा है जो पढ़ाई कर रहा है। परिवार का भरण पोषण करने के लिए किरीटी ही एक कमाने वाला घर में है।

धान के एकाध फसल से उनके परिवार का देख–रेख नहीं हो पाने के कारण किरीटी ने मौसमी सब्जियों का खेती करने लगा है। वह अपना उत्पाद पास के ही काटीन बाजार एवं जमशेदपुर के मानगो सब्जी हाटों में बेचते है। जिससे उन्हें सलाना लगभग डेढ़ लाख से अधिक का आय प्राप्त होता है। वह हमेशा पटमदा प्रखण्ड एटीक सेंटर में आते रहते है।

किरीटी अपने खेती के कामों के अलावा अन्य किसानों से नवीनतम तकनीक एवं खेती के तरीकों के बारे में विचारों का साझा करते हैं साथ ही कृषक मित्र होने के नाते लगातार कृषि विभाग एवं आत्मा के द्वारा संचालित विभिन्न सरकारी योजनाओं का प्रचार–प्रसार भी किसानों के बीच करते हैं।